पाठ 4. होली

पाठ की भूमिका

इस पाठ का उद्देश्य बच्चों में तदनुरूपता संबंधी कौशल विकसित करना है ताकि वे अपरिचित परिस्थितियों में जीवन को समझने में सक्षम हो सकें। मानव मन के चतुर चितेरे हरिवंशराय बच्चन जी ने इस कविता में होली के त्योहार की महत्ता का वर्णन किया है। होली का त्योहार हँसी-खुशी तथा प्यार बढ़ाने का त्योहार माना जाता है। यह संदेश कवि ने बड़े ही संजीदे ढंग से देने की चेष्टा की है।

पाठ का सार

कवि कहते हैं कि रूप-रंग, भाव-विचार आदि अलग होने के बावजूद भी हम सब एक मिट्टी से जुड़े हुए हैं। होली के दिन तुम किसी पराये को भी अपना बना सकते हो। रीति-रिवाज़ों के बंधनों को तोड़कर सभी के घनिष्ठ बन जाओ तथा अपने मित्रों को स्नेहरूपी पलकों में बिठा लो। आज तुम्हें कोई नहीं डाँटेगा क्योंकि आज होली है। प्रेम ही इस जगत का मूल है इसलिए नफ़रत तथा घृणा की भावना को त्यागकर संपूर्ण जगत को प्यार से भर दो। अपना-पराया, अमीर-गरीब सबको आज अपना बना लो तथा अपने शत्रुओं को भी प्रेम से गले लगा लो।

अध्यापन संकेत

- **मूल पाठ के लिए संकेत**

  होली के मूल में बसी कथा को मनोयोग से सुनें-सुनाएँ। होली से संबंधित किसी लोकगीत या फ़िल्मी गीत के अंश भी कविता में आवश्यकतानुसार सुने-सुनाए जा सकते हैं। कविता का आदर्श व अनुकरण वाचन अवश्य करवाएँ। कविता के व्याखेय अंशों का स्पष्टीकरण दें।

- **अभ्यास प्रश्नों के लिए संकेत**
  - **मौखिक प्रश्नों, पहेलियों, पठित परिच्छेद** व **पाठ आधारित प्रश्नों** के अध्यापन संकेत हेतु **पृष्ठ संख्या 79** देखें।
  - **भाषा आधारित प्रश्नों** का उद्देश्य व्याकरण एवं रचना पक्ष को सुदृढ़ करना है।
  - कुछ शब्दों में उपसर्ग और प्रत्यय एक साथ भी जुड़ते हैं। ऐसे शब्दों के कुछ उदाहरण दें।
  - मुहावरों के अर्थ स्पष्ट करने के लिए वाक्यों के प्रयोगों की सहायता लें।
  - विशेषण की तीनों अवस्थाओं की परिभाषा उदाहरणसहित समझाएँ।
- **क्रियाकलाप के लिए संकेत**
  - प्रत्येक बच्चे से उसका संस्मरण सुनें। इस प्रकार अनुभवों को साझा करने के बाद होली का संदेश बताएँ।
  - वर्तमान में कई अप्रिय चीज़ें होली के उत्सव में शामिल हो गई हैं। इसमें बच्चों के विचार जानें और एक साझा सूची तैयार करवाएँ।